भारत सरकार

रेल मंत्रालय

लोक सभा

29.07.2026 के

अतारांकित प्रश्न सं. 1835 का उत्तर

उत्तराखंड में नई रेल लाइनें

1835. श्री अजय भट्ट:

क्या रेल मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सरकार को प्रमुख शहरों और कस्बों को जोड़ने वाली नई रेल लाइन बिछाने की मंजूरी के लिए उत्तराखंड सहित विभिन्न राज्यों से प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं;

(ख) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(ग) अब तक स्वीकृत प्रस्तावों का ब्यौरा क्या है; और

(घ) स्वीकृति हेतु लंबित प्रस्तावों का ब्यौरा क्या है तथा उक्त प्रस्तावों को स्वीकृति न देने के क्या कारण हैं?

उत्तर

रेल, सूचना और प्रसारण एवं इलेक्ट्रोनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री

(श्री अश्विनी वैष्णव)

(क) से (घ):

उत्तराखंड:

रेल बजट:

उत्तराखंड में पूर्णतः/अंशतः पड़ने वाली अवसंरचना परियोजनाओं और संरक्षा कार्यों के लिए बजट आबंटन निम्नानुसार है:

अवधि	परिव्यय
2009-14	187 करोड़ रुपए प्रतिवर्ष
2026-27	4,769 करोड़ रुपए (25 गुना से अधिक)

स्वीकृत परियोजनाएं:

01.04.2026 की स्थिति के अनुसार, उत्तराखंड में पूर्णतः/अंशतः पड़ने वाली 188 किमी कुल लंबाई वाली 02 नई लाइनें, जिनकी लागत 39,686 करोड़ रुपए है, स्वीकृत की गई हैं। सारांश निम्नानुसार है:-

कोटि	परियोजनाओं की संख्या	कुल लंबाई (कि.मी. में)	कमीशन की गई लंबाई (कि.मी. में)	मार्च 2026 तक व्यय (करोड़ रुपए में)
नई लाइनें	02	188	06	22,014

हाल ही में पूर्ण की गई परियोजनाएं:

उत्तराखंड राज्य में पूर्णतः/अंशतः पड़ने वाली तथा हाल ही में पूर्ण की गई कुछ परियोजनाओं का ब्यौरा निम्नानुसार है:

क्र. सं.	परियोजना	लागत (करोड़ रुपए में)
1	देवबंद-रुड़की नई लाइन (28 कि.मी.)	1,289
2	हरिद्वार-लक्सर दोहरीकरण (27 कि.मी.)	347
3	बरेली-टनकपुर आमान परिवर्तन (102 कि.मी.)	313

उत्तराखंड को रेल संपर्कता प्रदान करने के लिए, ऋषिकेश-कर्णप्रयाग नई रेल लाइन परियोजना (125 कि.मी.) स्वीकृत की गई है।

इस परियोजना का संरेखण उत्तराखंड के देहरादून, टिहरी गढ़वाल, पौड़ी गढ़वाल, रुद्रप्रयाग और चमोली जिलों से होकर गुजरता है तथा यह देवप्रयाग एवं कर्णप्रयाग जैसे धार्मिक व पर्यटन स्थलों को ऋषिकेश और भारत की राष्ट्रीय राजधानी से रेल संपर्क प्रदान करेगा।

इस परियोजना का संरेखण मुख्यतः सुरंगों से होकर गुजरता है। इस परियोजना में 104 कि.मी. लंबाई की 16 मुख्य लाइन सुरंगों और लगभग 98 कि.मी. लंबाई की 12 निकास सुरंगों के निर्माण का कार्य शामिल है। अब तक, 101 कि.मी. लंबाई की मुख्य लाइन सुरंगें और 95 किमी से अधिक लंबाई की निकास सुरंगों का निर्माण कार्य पूर्ण कर लिया गया है।

कार्यों की गति बढ़ाने के लिए विभिन्न सुरंगों में 08 सहायक सुरंगें भी चिह्नित की गई थीं। इन सहायक सुरंगों से सुरंग उत्खनन के लिए अतिरिक्त मुहाने बने, जिनके परिणामस्वरूप, लंबी सुरंगों का कार्य शीघ्र पूर्ण किया जा सका। सभी 8 सहायक सुरंगों (5 कि.मी.) के कार्य भी पूर्ण किए जा चुके हैं।

इस परियोजना में 19 महत्वपूर्ण/बड़े पुलों के निर्माण का कार्य भी शामिल है। 19 में से 11 महत्वपूर्ण/बड़े पुलों के कार्य भी पूर्ण किए जा चुके हैं। शेष पुलों में भी कार्य आरंभ कर दिया गया है।

विगत तीन वर्षों अर्थात् 2023-24, 2024-25, 2025-26 तथा चालू वित्त वर्ष अर्थात् 2026-27 के दौरान, उत्तराखंड राज्य में पूर्णतः/अंशतः पड़ने वाली 446 कि.मी. कुल लंबाई वाले 08 सर्वेक्षण (03 नई लाइन, 05 दोहरीकरण) स्वीकृत किए गए हैं।

शुरू किए गए कुछ महत्वपूर्ण सर्वेक्षण निम्नानुसार हैं:-

क्र. सं.	परियोजना	कुल लंबाई (कि.मी. में)
1	धामपुर-काशीपुर नई लाइन	58
2	शाकुंभरी देवी के रास्ते देहरादून-सहारनपुर नई लाइन	81
3	लालकुआं-काठगोदाम दोहरीकरण	22
4	लालकुआं-रामपुर दोहरीकरण	66
5	हरिद्वार-मोतीचूर-रायवाला दोहरीकरण	12

देशभर में रेल परियोजनाओं/निर्माण कार्यों के लिए राज्य सरकारों, संसद सदस्यों, केंद्र सरकार के मंत्रियों, निर्वाचित जनप्रतिनिधियों, रेलवे की अपनी आवश्यकताओं, संगठनों/रेल उपयोगकर्ताओं आदि से रेलवे बोर्ड, क्षेत्रीय रेलों, मंडल कार्यालयों आदि सहित विभिन्न स्तरों पर औपचारिक और अनौपचारिक, दोनों प्रकार से प्रस्ताव/अनुरोध/सुझाव/अभ्यावेदन प्राप्त होते हैं। चूंकि ऐसे प्रस्तावों/शिकायतों/सुझावों का प्राप्त होना एक सतत और गतिशील प्रक्रिया है, इसलिए ऐसे अनुरोधों का केन्द्रीकृत सार-संग्रह नहीं रखा जाता है। बहरहाल, इनकी जांच की जाती है और समय-समय पर यथा व्यवहार्य और औचित्यपूर्ण पाए जाने पर कार्रवाई की जाती है।

किसी भी रेल परियोजना की स्वीकृति कई मानदंडों/कारकों पर निर्भर करती है, जिनमें निम्नलिखित शामिल हैं:

- अनुमानित यातायात पूर्वानुमान और प्रस्तावित मार्ग की लाभप्रदता
- परियोजना द्वारा प्रदान की गई पहली और अंतिम स्थान पहुंच संपर्कता
- अनुपलब्ध कड़ियों को जोड़ना और अतिरिक्त मार्ग प्रदान करना
- संकुलित/संतृप्त लाइनों का संवर्धन
- राज्य सरकारों/केंद्रीय मंत्रालयों/जनप्रतिनिधियों द्वारा उठाई गई मांगें
- रेलवे की अपनी परिचालनिक आवश्यकताएँ
- सामाजिक-आर्थिक महत्व
- निधियों की समग्र उपलब्धता

रेल परियोजना/परियोजनाओं का पूरा होना कई कारकों पर निर्भर करता है, जिनमें निम्नलिखित शामिल हैं:

- **राज्य सरकार द्वारा भूमि अधिग्रहण**
- **वन संबंधी स्वीकृति**
- **अतिलंघनकारी जनोपयोगी सुविधाओं का स्थानांतरण**
- **विभिन्न प्राधिकरणों से सांविधिक स्वीकृतियाँ**
- **क्षेत्र की भूवैज्ञानिक और स्थलाकृतिक परिस्थितियाँ**
- **परियोजना स्थल के क्षेत्र में कानून और व्यवस्था की स्थिति**
- **परियोजना स्थल विशेष के लिए वर्ष में कार्य करने के महीनों की संख्या आदि।**

ये सभी कारक परियोजना/परियोजनाओं के पूरा होने के समय और लागत को प्रभावित करते हैं।

******